

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये चतुस्त्रिंशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে চতুস্ত্রিংশং দশকম্ ॥

শ্রীরামচরিতর্পণনম্

গীর্গাণৈরর্থ্যমানো দশমুখনিধনং কোসলেহ্ৰবৃশ্যশৃঙ্গে
পুত্রীযামিষ্টিমিষ্টিরা দদুষি দশরথক্ষ্মাভূতে পাযসাগ্র্যম্।
তদ্ভুক্ত্যা তৎপুরক্ষীর্ষপি তিসৃষু সমং জাতগর্ভাসু জাতো
রামস্ত্বং লক্ষ্মণেন স্বয়মথ ভরতেনাপি শক্রঘ্ননাম্মা ॥ 34.1 ॥

কোদণ্ডী কৌশিকস্য ক্রতুররমরিতুং লক্ষ্মণেনানুযাতো
যাতোহ্ৰুস্তাতরাচা মুনিকথিতমনুদ্বন্দ্বশান্তাধ্বখেদঃ।
নূণাং ত্রাণায় বাণৈর্মুনি রচনবলাত্তাটকাং পাটযিৎরা
লঙ্করাস্মাদস্ত্রজালং মুনিরনমগমো দেব সিদ্ধাশ্রমাখ্যম্ ॥ 34.2 ॥

মারীচং দ্রারযিৎরা মখশিরসি শরৈ -
রন্যরক্ষাংসি নিঘ্নন্
কল্যাং কুর্নহল্যাং পথি পদরজসা
প্রাপ্য রৈদেহগেহম্।
ভিন্দানশ্চান্দ্রচূডং ধনুররনিসুতা -
মিন্দিরামের লঙ্করা
রাজ্যং প্রাতিষ্ঠথাস্ত্বং ত্রিভিরপি চ সমং
ভাতুরীরৈস্সদারৈঃ ॥ 34.3 ॥

আরুন্ধানে রুষাক্কে ভৃগুকুলতিলকে সঙ্কময্য স্বতেজো
যাতে যাতোহস্যযোধ্যাং সুখমিহ নিরসন্ কান্তযা কান্তমূর্তে।

शक्रघ्नैनैकदाथो गतरति भरते मातुलस्याधिरासं
तातारक्नोहभिषेकस्तर किल रिहतः केकयाधीशपुत्र्या ॥ 34.4 ॥

तातोक्त्या यातुकामो र्नमनुज र्धूसंयुतश्चापधारः
पौरानारुध्य मार्गे गुहनिलयगतस्त्रुं जटाचीरधारी।
नारा सन्तीर्य गङ्गामधि पदरि पुनस्तुं भरद्वाजमारा -
नृरा तद्वाक्यहेतोरतिसुखमरसश्चिद्रकुटे गिरीन्द्रे ॥ 34.5 ॥

श्रृंरा पुत्रार्तिथिन्नं खलु भरतमुखां
स्वर्गयातं स्वतातं
तप्तो दंराह्नु तस्मै निदधिथ भरते
पादुकां मेदिनीं च।
अत्रिं नंराहथ गंरा र्नमतिरिपुलं
दणुकं चणुकायं
हंरा दैत्यं रिराधं सुगतिमकलय -
शारु भोः शारुभस्यै ॥ 34.6 ॥

नंराहगस्यं समस्ताशरनिकर सपत्राकृतिं तापसेभ्यः
प्रत्यश्रीषीः प्रियैषी तदनु च मुनिना रैशरे दिर्याचापे।
ब्रह्मास्त्रे चापि दत्ते पथि पितृसुहृदं रीक्ष्य डूयो जटायुं
मोदां गोदातटांते परिरमसि पूरा पणुरट्यां र्धुट्या ॥ 34.7 ॥

प्राप्तायाः शूर्पणख्या मदनचलधृतेरथनैर्निस्सहात्वा
तां सौमित्रौ रिसृज्य प्रबलतमरुषा तेन निर्लूननासाम्।
दृष्टैरनां रुष्टचित्तं खरमभिपतितं दूषणं च त्रिमूर्धं
र्याहिंसैराशरानप्ययुत समधिकांस्तुंक्षणादक्कतोष्मा ॥ 34.8 ॥

सोदर्या प्रोक्तुवार्तारिरशदशमुखादिष्टमारीचमाया -
सारङ्गं सारसाम्क्या स्पृहितमनुगतः प्रारधीर्वाणघातम्।

तन्मायाक्रन्दनिर्घापितभरदनुजां रारणस्तामहर्षी -

वेनार्तोहपि वरमन्तः किमपि मुदमधास्तद्बोधोपायलाभात् ॥ 34.9 ॥

डूयस्तन्त्रीं रिचिन्नन्नहत दशमुखस्तद्बुधुं मद्बुधेने -

तुक्त्वा याते जटाशौ दिरमथ सुहृदः प्रातनोः प्रेतकार्यम्।

गुहानं तं कवक्कं जघनिथ शवरीं प्रेक्ष्य पम्पातटे वरं

सम्प्राप्तो रातसूनुं भृशमुदितमनाः पाहि रातालयेष ॥ 34.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये चतुस्त्रिंशं दशकं समाप्तम् ॥